Date:-19 /05 /2020.
Day: - Thuesday.
Time: - 12:30 to 1:20.
Class:- B.Ed. session (2019 21)
1st year. Subject:-Childhood and Growing Up.paper:-1

Topic (e-content) : – 6. बुद्धि का क्रमिक महत्त्व सिद्धान्त

वर्नोन व बर्ट ने मिलकर बुद्धि का क्रमिक महत्त्व सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। बुद्धि के इस सिद्धांत के

अनुसार प्रत्येक मानसिक योग्यता को क्रमिक महत्त्व प्रदान किया गया है।

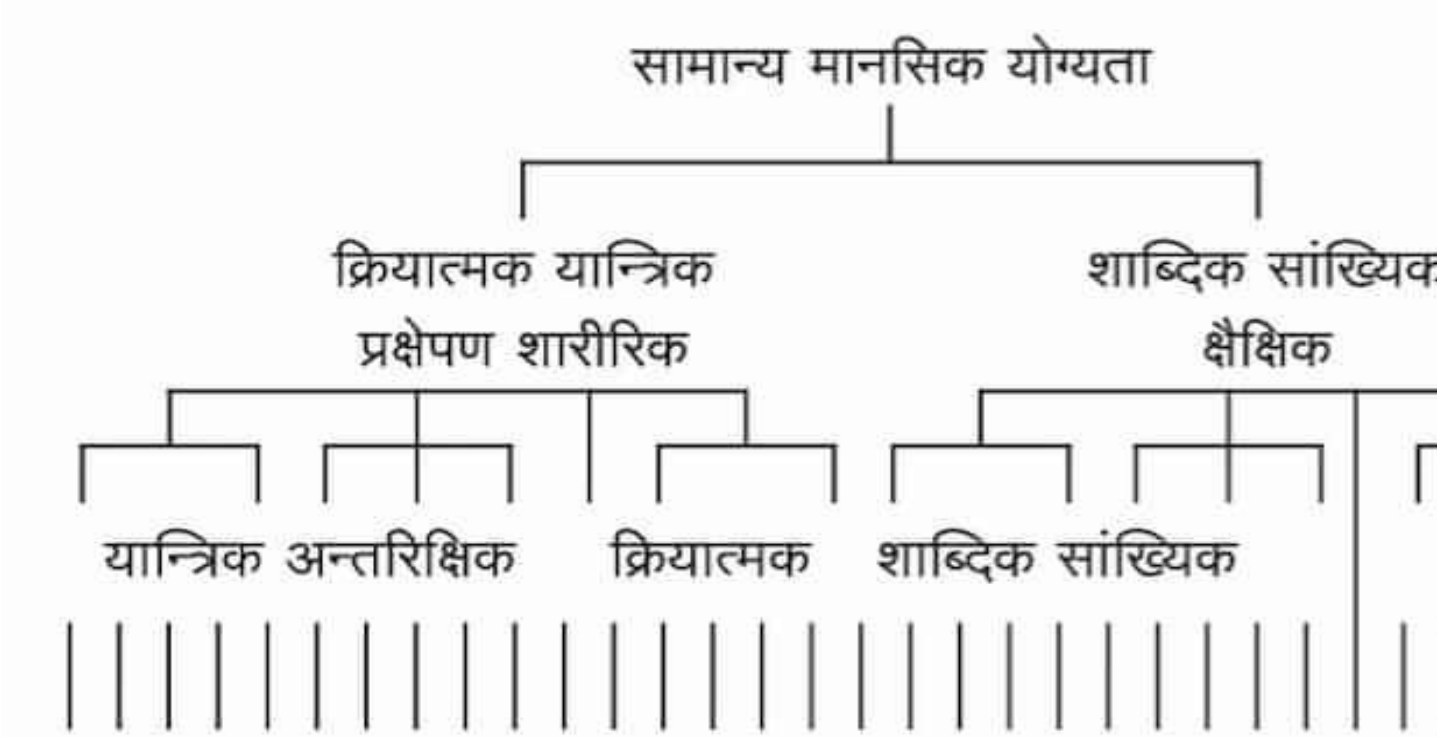

बुद्धि का क्रमिक महत्त्व सिद्धान्त

बुद्धि के इस सिद्धांत मे सबसे पहले क्रम में सामान्य मानसिक योग्यता आती है, और उसके बाद विशिष्ट योग्यता आती है।

7. बुद्धि का त्रि-आयाम सिद्धान्त

बुद्धि का त्रि-आयाम सिद्धान्त को 1967 में गिलफोर्ड ने दिया। गिलफोर्ड के इस बुद्धि का त्रि-आयाम सिद्धान्त को त्रिविमीय सिद्धान्त या बुद्धि संरचना सिद्धान्त भी कहते हैं।

गिलफोर्ड ने त्रिविमीय सिद्धान्त या बुद्धि संरचना सिद्धान्त, थॉर्नडाइक व स्पीयरमैन के सिद्धान्तों से अलग हटकर कारकों या तत्त्वों को तीन विमाओं में बाँटा है जो कि निम्लिखित है–

1. संक्रिया
2. विषयवस्तु
3. उत्पादन

गिलफोर्ड बुद्धि का त्रि-आयाम सिद्धान्त

संक्रिया :-

यह व्यक्ति द्वारा की गई मानसिक प्रक्रिया के स्वरूप से सम्बन्धित होता है। संक्रिया को पाँच भागों में बाँटा गया है, जिनमें प्रत्येक के 5 कारक या तत्व हैं–

Sr. No.	विमा	कारक
(1)	मूल्यांकन	5
(2)	अभिसारी चिन्तन	5
(3)	अपसारी चिन्तन	5
(4)	ज्ञान	5
(5)	स्मृति	5

विषयवस्तु:-

विषयवस्तु में सूचनाओं के आधार पर संक्रियायें की जाती हैं। इन सूचनाओं को चार भागों में बाँटा गया है, जिनमें प्रत्येक के 4 कारक या तत्व हैं–

Sr. No.	विमा
(1)	आकार
(2)	सांकेतिक
(3)	शाब्दिक
(4)	व्यावहारिक

उत्पादन-:

उत्पादन अर्थ किसी विशेष प्रकार की विषय-वस्तु द्वारा की गयी संक्रिया के परिणाम से होता है। गिलफोर्ड ने उत्पादन को छः भागों में बाँटा है, जो कि निम्नलिखित हैं, जिनमें प्रत्येक के 6 कारक या तत्व हैं–

Sr. No.	विमा
(1)	इकाई
(2)	वर्ग
(3)	सम्बन्ध
(4)	पद्धतियाँ
(5)	रूपान्तरण
(6)	प्रयोग

इस प्रकार गिलफोर्ड के अनुसार बुद्धि के कुल = 5 x 4 x 6 = 120 कारक या तत्त्व होते हैं।